सत्याग्रह
(गांधीजी)

* परिचय
* निष्क्रिय प्रतिरोध सत्याग्रह में अन्तर
* सत्याग्रह की शर्तें
* सत्याग्रह के विभिन्न रूप
* सत्याग्रह का मूल्यांकन
* निष्कर्ष

परिचय: गांधीजी की सत्य-अहिंसा, साध्य और साधन की श्रेष्ठता तथा व्यक्ति की नैतिक शक्ति में दृढ़ आस्था थी और अपने इन्हीं सिद्धांतों के आधार पर उन्होंने बुराई के प्रतिरोध के नवीन मार्ग का आविष्कार किया, जिसे सत्याग्रह नाम दिया। सत्याग्रह गांधीजी का अपूर्व देन है। स्वयं गांधीजी के शब्दों में, "अपने विरोधियों को दुःखी बनाने के बजाय, स्वयं अपने पर दुःख डालकर सत्य की विजय प्राप्त करना ही सत्याग्रह है।" सत्याग्रह शक्तिशाली और वीर मनुष्यों का शस्त्र है। एक सत्याग्रही अपने प्रतिद्वंद्वी से आध्यात्मिक संबंध स्थापित करता है। वह उसमें ऐसा विचार उत्पन्न कर देता है कि वह बिना अपने को नुकसान पहुँचाये, उसको नुकसान नहीं पहुँचा सकता। सत्याग्रह सत्य पर विजय हेतु एक नैतिक संघर्ष है।

निष्क्रिय प्रतिरोध और सत्याग्रह में अन्तर

अनेक बार सत्याग्रह को निष्क्रिय प्रतिरोध का पर्यायवाची समझ लिया जाता है किन्तु वस्तुतः ऐसा नहीं है। यद्यपि दोनों आक्रमण का सामना करने, विरोधों को दूर करने तथा सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन लाने की पद्धतियाँ हैं; लेकिन फिर भी दोनों में मूलभूत अन्तर है:

* सत्याग्रह अहिंसा के रूप में नहीं बल्कि आदर्श के रूप में अपनाया जाता है। सत्याग्रही किसी भी स्थिति में हिंसा का प्रयोग नहीं करता किन्तु निष्क्रिय प्रतिरोध में निर्बलता के कारण अहिंसा का पालन किया जाता है।
* निष्क्रिय प्रतिरोध में शत्रु को परेशान करने की भावना पर बल दिया जाता है। सत्याग्रह में सत्याग्रही स्वयं ही अधिकतम कष्ट सहता है।
* निष्क्रिय प्रतिरोध निर्बल का शस्त्र है और सत्याग्रह वीर का। सत्याग्रह करने के लिए, निर्भयता, हिम्मत और मर्दानगी की जरूरत होती है। गांधीजी के शब्दों में, निर्बल कभी सत्याग्रही हो ही नहीं सकता।

Scanned with CamScanner

* निष्क्रिय प्रतिरोध द्वेष, घृणा और प्रतिशोध पर आधारित है, लेकिन सत्याग्रह प्रेममूलक है। यह विरोधी के प्रति प्रेम की भावना पर आधारित है।

सत्याग्रही के गुण

गांधीजी के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति सत्याग्रह के सिद्धान्त पर आचरण नहीं कर सकता। सत्याग्रही के कुछ विशेष गुण होने चाहिए। सत्याग्रही के लिए यह आवश्यक है कि वह सत्य पर चलने वाला हो तथा अनुशासन में विश्वास रखने वाला हो। सत्याग्रही अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए छल कपट का आश्रय नहीं लेता। वह जो कुछ करता है, खुले रूप में करता है और अपने कार्यों को छिपाने के बजाय स्वीकार करने के लिए तत्पर रहता है। गांधीजी ने हिन्द स्वराज में सत्याग्रही के लिए 11 व्रतों का पालन आवश्यक बताया, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शारीरिक श्रम, अस्वाद, निर्भयता, सर्वधर्म समभाव, स्वदेशी तथा अस्पृश्यता निवारण।

सत्याग्रह के विभिन्न रूप

गांधीजी के अनुसार सत्याग्रह विभिन्न परिस्थितियों में अलग-अलग रूप धारण कर सकता है :

(1) **असहयोग आंदोलन** : गांधीजी का विचार था कि कोई भी शासक सारी जनता के सहयोग से ही शोषण और अत्याचार किया जा सकता है। ऐसी स्थिति में यदि जनता शासन को सहयोग से इंकार कर दे तो शासक कार्य नहीं कर सकता। 1919-20 में भारत में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध असहयोग आंदोलन का मार्ग अपनाया था।

(2) **सविनय अवज्ञा आंदोलन** : सत्याग्रह का असहयोग से अधिक प्रभावपूर्ण रूप सविनय अवज्ञा है। सविनय अवज्ञा का तात्पर्य अहिंसक और विनम्रपूर्ण तरीके से कानून की अवज्ञा करना है। कानूनों की यह अवज्ञा हिंसक रूप ग्रहण न कर ले, इसलिए सविनय अवज्ञा का प्रयोग जनसाधारण द्वारा नहीं बल्कि कुछ व्यक्तियों द्वारा किया जाना चाहिए। सन् 1930 में नमक आंदोलन में इसका एक सत्याग्रह के रूप में प्रयोग किया था।

(3) **हिजरत या प्रवजन** : सत्याग्रह का तीसरा रूप हिजरत है, जिसका अर्थ है, स्थायी निवास स्थान का स्वैच्छिक परित्याग। ऐसे व्यक्ति जो अपने आपको पीड़ित अनुभव करते हों, अपनी रक्षा के लिए हिंसक शक्ति नहीं रखते हों, वो हिजरत का प्रयोग किया जा सकता है। सन् 1928 में बारडोली और 1939 में विट्ठलगढ़ और लिम्बड़ी की जनता ने गांधीजी को हिजरत का सुझाव दिया था।

(4) **अनशन** : अनशन सत्याग्रह का अन्य रूप है। गांधीजी इसे अत्यधिक उग्र अस्त्र समझते थे इसे आपात में अत्यधिक

Scanned with CamScanner

जानी चाहिए। इसका केवल आतंकवादियों और अत्याचारियों के खिलाफ ही किया जाना चाहिए। इसका प्रयोग हर किसी व्यक्ति द्वारा नहीं बल्कि केवल सम्पन्न व्यक्तियों द्वारा ही किया जाना चाहिए।

(5) **हड़ताल** : हड़ताल भी सत्याग्रह का एक साधन है। गांधीजी वर्ग संघर्ष की धारणा में विश्वास नहीं करते थे। हड़ताल का लक्ष्य स्वयं कष्ट सहन करते हुए विरोधी का हृदय-परिवर्तन करना है। मिल मालिकों द्वारा श्रमिकों पर आक्रमण किये जाने पर उन्होंने श्रमिकों को हड़ताल का परामर्श दिया था।

सत्याग्रह का मूल्यांकन

गांधीजी के सत्याग्रह का एक तरफ गुणगान किया गया है तो दूसरी ओर इसकी कटु आलोचना की गई है :—

(1) **सत्याग्रह अहिंसा की धारणा के अनुकूल नहीं** : आलोचकों ने सत्याग्रह की आलोचना करते हुए कहते हैं कि सत्याग्रह अहिंसा की धारणा के अनुकूल नहीं है। सत्याग्रह का तात्पर्य न केवल हिंसा का निषेध, वरन् विरोधी के प्रति दुर्भावना का भी त्याग है। अहिंसा में मन, वचन और कर्म को किसी रूप में हिंसा का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए और विरोधी के मन को दुःख नहीं पहुँचाया जाना चाहिए।

(2) **सत्याग्रह का प्रयोग सभी परिस्थितियों में नहीं** : अच्छे व्यक्तियों में जहाँ विवेक, मानवता के प्रति आदर और न्याय विद्यमान हो, सत्याग्रह का सफलतापूर्वक प्रयोग किया जा सकता है, परन्तु निरंकुश सत्ता सत्याग्रह की सफलता में निश्चित रूप से संदेह व्यक्त किया जाता है। अनेकों बार शासक वर्ग द्वारा दमनात्मक कार्य के आधार पर सत्याग्रह को कुचल दिया जाता है।

(3) **अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सत्याग्रह संभव नहीं** : गांधीजी द्वारा विदेशी आक्रमण की स्थिति में सत्याग्रह का सुझाव दिया था, किन्तु व्यावहारिक अनुभव के आधार पर सत्याग्रह सफल नहीं हो सकता। कोई भी राष्ट्र अहिंसक साधनों पर निर्भर रहकर अपने नागरिकों की स्वतंत्रता और सुरक्षा को खतरे में नहीं डाल सकता।

(4) **सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन लाना कठिन** : साम्यवादी और आतंकवादी तथा अन्य क्रान्तिकारी विचारधारा वाले व्यक्ति गांधीवादी विचारधारा की आलोचना करते हुए कहते हैं कि सत्याग्रह से सामाजिक और आर्थिक स्थिति को पूर्णतया बदला नहीं जा सकता। सामाजिक और आर्थिक ढाँचे को बदलने के लिए बल का प्रयोग करना आवश्यक होगा।

(5) सत्याग्रह के नाम पर दुरुपयोग की आशंका :

सत्याग्रह के विरुद्ध यह भी आलोचना की जाती है कि वर्तमान समय में सत्याग्रह के नाम पर इसका दुरुपयोग किया जा रहा है। विभिन्न दलों द्वारा अपने क्षुद्र स्वार्थों की पूर्ति के लिए आंदोलन चलाते हैं और उसे भी सत्याग्रह कह दिया जाता है वास्तव में वे सत्याग्रह न होकर दुराग्रह ही होते हैं।

निष्कर्ष: उपर्युक्त विचार-दर्शन के आधार पर कहा जा सकता है कि सत्याग्रह औचित्य-अनौचित्य की वस्तुस्थिति पर निर्भर करती है कि उसका प्रयोग किस प्रकार के व्यक्तियों द्वारा किया जाता है। नैतिक उच्चादर्शवादी व्यक्तियों का आत्मिक अस्त्र है, लेकिन व्यवहार में अनेक बार अवांछित व्यक्तियों द्वारा अपनी स्वार्थपूर्ति हेतु कार्यवाही की जाती है; उसे भी सत्याग्रह का नाम दे दिया जाता है। वास्तव में, दोष सत्याग्रह के नहीं, वरन् सत्याग्रह को प्रयोग में लाने वाले व्यक्तियों के हैं। सत्याग्रह का सही ढंग से यदि प्रयोग किया जाये तो सत्याग्रह निश्चित रूप से श्रेष्ठ, नैतिक, आत्मिक और अत्यधिक प्रभावशाली अस्त्र है।

—×—

Girijesh Singh, Asst. Professor
Dept. Political Science
R.N. College, Pandaul, Madhubani

Class : Deg I (H) Paper-II
Topic : Political thought - Satyagrah
(सत्याग्रह)
Date : 06/05/2020

Scanned with CamScanner